कला और समाज (Relation between Art and Society)

Ans. कला हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। समाज को प्रभावित करने में कला की भूमिका अग्रणी है कला ~~सामाजिक~~ सामाजिक ऐसे विविध सत्यों और तथ्यों को प्रकट करती है जो शब्दों से नहीं प्रकट किए जा सकते है और न कला के अलावे किसी अन्य माध्यम से। कला बालकों को सिखाती है कि किसी समस्या के कई हल हो सकते है, और किसी प्रश्न के एक से अधिक उत्तर भी हो सकते है। यह बालकों में विविध दृष्टिकोणों का विकास करती है। क्रोसे के अनुसार, कला किसी कलाकार के चेतन मन की क्रिया है कलाकार अपनी कला से किसी समस्या की अभिव्यक्ति कर अपने दर्शकों, श्रोताओं से संबंध स्थापित करता है। कला कलाकार का संवेग है, जब संवेगों की अभिव्यक्ति होती है तो कला बन जाती है। कलाकार से विशिष्ट संवेदना की अपेक्षा की जाती है। कला और समाज के संबंध को निम्न रूप में वर्णित किया जा सकता है —

Scanned with CamScanner

1. कला का समाज पर प्रभाव : राधाकमल मुखर्जी के शब्दों में, "प्रत्येक समाज की अपनी एक कलात्मक स्वरूप होती है तथा उसकी एक खास विशेषता होती है।" प्रत्येक देश तथा उसके समाज अपने सामाजिक रीति-रिवाजों, धर्म, संस्कृति प्रेरित होते रहते हैं। यह उसके लिए आदर्श होते हैं। उनकी आस्था, विश्वास उससे जुड़े होते हैं। उनकी सामाजिक व्यवस्थाओं, रीति-रिवाजों, कलाकृतियों में उसकी झलक साफ दिखाई देती है जैसे - हिन्दुओं के मंदिर, सिखों के गुरुद्वारा, मुस्लिमों के मसजिद तथा इशाईयों के चर्च यह बताने के लिए काफी होता है कि यहाँ आनेवाले व्यक्ति किस धर्म में अपनी आस्था रखनेवाले हैं।

2. समाज और कलाकार के मध्य संबंध
Relationship between Society and Artist.

Scanned with CamScanner

समाज और कलाकार के मध्य एक चुनौती रहित अन्तर संबंध होता है। कलाकार समाज का सदस्य होने के नाते समाज के विविध वातावरण से मिश्र रहता है। कलाकार अपने श्रोताओं, दर्शकों के सामने समाज, परिवेश के छुपे हुए सत्य को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। कला कलाकारों की आत्म-अभिव्यंजना का एक विशेष माध्यम है। कला प्रदर्शन के कई माध्यम है जैसे- चित्रकारी, हस्तशिल्प, साज-सज्जा, प्रदर्शन कला, नृत्य कला, संगीत, ~~अ~~(स्वर संगम), वाद्ययंत्र, तथा अन्य कई। यह सभी माध्यम कलाकारों को समाज से जोड़ने का कार्य करती है।

२. कला और सामाजिक परिवर्तन (Art and social change) →

किसी समाज की पारंपरिक ~~व्यव~~ सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन कहलाती है। कलाकार वे लोग होते हैं जो अपने विचारों और प्रतिक्रिया को बिना किसी राजनीतिक, सामाजिक दबाव में आए बिना प्रस्तुत करते है। राजनीतिक दमन या संघर्ष का प्रभाव जब किसी समाज पर पड़ता है तो सामाजिक परिवर्तन अवश्यमभावी माना जाता है। इसकी प्रस्तुती ही समाज की दर्पण मानी जाती है।